



परमेश्वर अपनी कलीसिया कैसे बनाता है

How God Builds His Church

उद्देश्य (OBJECTIVE)

कलीसिया को कौन बना रहा है — आप या परमेश्वर?

इस प्रशिक्षण में हम सीखेंगे कि हम कैसे परमेश्वर की कलीसिया को **सही रूप में** बना सकते हैं:

- यीशु से **व्यक्तिगत प्रकाशन** प्राप्त करके
- उसके द्वारा दिए गए **अधिकार** में चलकर
- और **स्वर्ग के राज्य की चाबियों** तक पहुँच बनाकर ताकि हम परमेश्वर की सामर्थ को पृथ्वी पर ला सकें।

इन तीन पहलुओं को समझकर, हम उसकी कलीसिया के निर्माण में प्रभावी ढंग से भाग ले सकते हैं और अपने आसपास की दुनिया पर प्रभाव डाल सकते हैं।

सारांश

- परमेश्वर अपनी कलीसिया लोगों के माध्यम से बनाता है। (1 पतरस 2:5)
- यीशु ने पतरस को जो आमंत्रण दिया, वह उसकी कलीसिया को बनाने का तरीका दर्शाता है। (मत्ती 16:16)
 - **प्रकाशन (Revelation):** यीशु मसीह को मसीहा के रूप में व्यक्तिगत रूप से पहचानना।
 - **अधिकार (Authority):** यीशु द्वारा दिया गया अधिकार प्राप्त करना और शत्रु पर जय पाना।
 - **पहुँच (Access):** स्वर्ग के राज्य की चाबियों का उपयोग करना ताकि स्वर्ग को पृथ्वी पर लाया जा सके।
- भले सामरी की दृष्टांत हमें यह सिखाती है कि हम कैसे स्वर्ग के राज्य तक पहुँच बना सकते हैं:
 - **देखना (See):** लोगों को परमेश्वर की दृष्टि से देखना और उनकी ज़रूरतों को पहचानना।
 - **मदद करना (Help):** व्यावहारिक तरीकों से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना, कलीसिया के संसाधनों का उपयोग करके।
 - **लौटना (Return):** इसे एक जीवनशैली बनाना, न कि केवल एक बार की सेवा।
- मसीह में हमारी पहचान, उसकी कलीसिया को बनाने के लिए हमारे बुलावे को आकार देती है।

संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- 1 पतरस 2:5
- मत्ती 16:16
- 1 पतरस 5:8

अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. आप यीशु द्वारा दिए गए अधिकार को कैसे समझते हैं और प्रतिदिन उसमें कैसे चलते हैं?

2. क्या आपने कभी ऐसा "दूसरा परिवर्तन" अनुभव किया है जहाँ आपने दूसरों की ज़रूरतों के माध्यम से यीशु को देखा और सेवा के लिए बुलाहट महसूस की?
यदि हाँ, तो इसने आपकी सेवकाई को कैसे प्रभावित किया?

3. आप कैसे व्यावहारिक रूप से उस अधिकार में चल सकते हैं जो यीशु ने आपको शत्रु पर जय पाने के लिए दिया है?

4. परमेश्वर की दृष्टि से संसार को देखने के कुछ विशेष उदाहरण क्या हैं, जिनके कारण आप और अधिक प्रभावी रूप से दूसरों से प्रेम और सेवा कर सके हैं?

अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- लूका 10:25-37
- मत्ती 25:31-40